दुन्या से नफरत (बुखारी शरीफ किताबुल रिकाक)

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे बुखारी शरीफ हिन्दी.

नोटः- 'हदीष की रिवायत का खुलासा है'.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

*रावी हज़रत उबादा बिन सामित रदी:> नबी करीमﷺ ने फरमाया जो आदमी अल्लाह तआला से मिलने को पसन्द करता है तो अल्लाह तआला भी उस्से मुलाकात को पसन्द करते है और जो अल्लाह तआला से मिलने को बुरा समझता है तो अल्लाह तआला भी उस्से मिलने को बुरा जानते है. हज़रत आइशा (रदी) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हम सब मौत को नापसन्द करते है. आपने फरमाया इस्का मतलब ये नहीं है बल्की बात ये है की मोमिन के पास जब मौत आ रही होती है तो उसे अल्लाह तआला की तरफ से रज़ामंदी और उस्की कामयाबी की खुशखबरी दी जाती है. वह उस वकत उन इनामात से जियादा जो उसे आगे मिलने होते है किसी दूसरी चीझ को पसन्द नहीं करता, इसलिये वह अल्लाह तआला से जल्द मिलने की आरज़ू करता है और अल्लाह तआला भी उस्की मुलाकात को पसन्द करते है. और जब काफिर की मौत का वकत

आता है और उसे अल्लाह तआला के अजाब की खबर दी जाती है जो उसे आगे मिलने वाला होता है तो वह उसे पसन्द नहीं करता, इसलिये वह अल्लाह तआला से मिलना नापसन्द करता है और अल्लाह तआला भी उस्से मिलना पसन्द नहीं करते.
वजाहत- जो आदमी दुन्या से नफरत करता है वह गोया अल्लाह तआला से मुलाकात का इच्छुक है, और जो दुन्या को चाहता है वह गोया अल्लाह तआला से मुलाकात करना नहीं चाहता. जिस आदमी को अल्लाह तआला से मुलाकात का शौक होगा वह उस्की तैयारी करेगा, और जिसे अल्लाह तआला के सामने पेश होने का खौफ होगा वह भी दुन्या में एहतियात से कदम रखेगा. (फत्हुल बारी)

*रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी:> नबी करीमﷺ ने फरमाया अल्लाह तआला का इरशाद है की जिसने हमारे दोस्त से दुश्मनी की हम उसे खबरदार कर देते है की हम उस्से लडेगे और हमारा बन्दा जिन-जिन इबादतो से हमारी निकटता हासिल करता है उन्मे कोई इबादत हमे उस इबादत से जियादा पसन्द नहीं जो हमने उसपर फर्ज की है, और हमारा बन्दा नवाफिल की अदायेगी से हमारे इतने करीब हो जाता है की हम उस्से मुहब्बत करने लगते है, और जब हम उस्से मुहब्बत करते है तो हम उस्का कान बन जाते है जिस्से वह सुनता है और उस्की आंख बन जाते है जिस्से वह देखता है और उस्का हाथ बन

जाते है जिस्से वह पकडता है और उस्के पांव बन जाते है जिस्से वह चलता है, वह अगर हमसे मांगता है तो हम उसे देते है, वह अगर पनाह तलब करता है तो उसे पनाह देते है, और हमे किसी काम में जिसे करना चाहते है इतनी पसोपेश नहीं होती जितनी अपने मुस्लमान बंदे की जान निकालने में होती है, वह तो मौत को (जिस्मानी तकलीफ के सब्ब) बुरा समझता है और हमे भी उसे तकलीफ देना नागवार गुजरता है.

वजाहत- एक हदीस में है की हम अपने बंदे का दिल बन जाते है जिस्से वह समझता है और उस्की जबान बन जाते है जिस्से वह गुफ्तगू करता है, यानी जब बन्दा अल्लाह तआला की इबादत में डूब जाता है और महबूबियत के मरतबे पर पोहचता है तो उस्के जाहिरी और बातिनी हवास सब शरीअत के ताबे हो जाते है. वह हाथ-पांव, कान-आंख, जबान और दिल व दिमाग से वोही काम लेता है जिस्मे अल्लाह तआला की मर्ज़ी होती है, उस्से शरीअत के खिलाफ कोई काम सरजद नहीं होता. (फत्हुल बारी)